

SHRI VISHNU PANDYA

Shri Vishnu Pandya is a renowned journalist, editor, thinker, author of three novels, essays, orator and political commentator with profound political insight. He has edited several newspapers and magazines like Jansatta, Sadhana (Weekly) and contributed as a columnist to national newspapers and magazines- Dharmayuga, Dainik Jagaran, Samay Sahara, Ravivar, Organizer, Panchjanya, Janmabhoomi, Janshakti etc. He is appreciated widely as a political analyst in Gujarat and Pan-India. His in-depth study of Indian history and political theories has made him a distinguished political analyst and critic.

2. Born on September 14, 1945 in a small town Manavadar of Saurashtra region in Gujarat, Shri Pandya received the degrees of M.A. and L.L.B. He taught as a professor at S.N.D.T. Women's College, Ahmedabad, GLS Girls and City Arts College, Gujarat University and St. Xaviers College, Ahmedabad. He has worked as an honorary member of Board of Studies at Saurashtra University, M. S. University, Vadodara and a member of Pandit Shyamji Krishna Verma Smarak Samiti, Gandhinagar and Swarnim Gujarat Pradesh Samiti, Gnadhinagar. He served as general secretary of Vishwa Gujarati Samaj from 2009 to 2015. He is also chairman of Gujarat History Research Centre, Gandhinagar.

3. Shri Pandya is a prolific writer and columnist who has penned and published more than two thousand articles in various newspapers and magazines. He and his wife Dr. Mrs. Arti Pandya have written ninety two books on journalism, history, politics, essays, biographies and novels. He was imprisoned during the Emergency in the year 1976 for his protest against the suppression of freedom of expression. He was in Jail under MISA for a year. His book Misavasyam is a vivid record of Emergency days in India expressing the voice of protest against curbing civil rights and censoring freedom of expression and press. During the Emergency days, his book Hatheli Nu Akash was awarded a prize by the government of Gujarat which he refused to accept. Some of his poems on the Emergency have been included in an anthology titled Voices of Emergency edited by John Oliver Perry.

4. Shri Pandya is an independent thinker who critiques political events in historical perspectives. He is frequently invited to present his views on current political and cultural events as a panelist on many Gujarati as well as national television channels. He is an impressive orator and teacher of journalism and history. His contribution to theory and history of journalism in Gujarati language is truly commendable. He has contributed to Vibrant Gujarat Summit since 2005 writing and producing Mega Event Show based on the local history and historical places of Gujarat.

5. Shri Pandya has been conferred with numerous awards and prizes. His fifteen books have been honoured with awards by Gujarat Sahitya Parishad and Gujarati Sahitya Akademi. In 1991, he was awarded Narmad Chandrak from Narmad Sahitya Sabha for his writings on history. He has been felicitated by Abhivadan Trust, Mumbai, Gujarat Patrakar Sangh and N.C.G.O. (England). He was conferred upon Kaka Kalelkar Prize for his book Misavasyam. His contribution to journalism, history, political analysis literature and biography is truly exceptional.

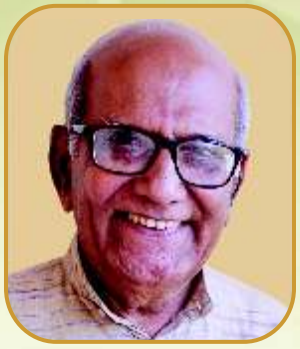

श्री विष्णु पण्ड्या

श्री विष्णु पण्ड्या एक नामचीन पत्रकार, संपादक, विचारक, तीन उपन्यासों के लेखक, निबंधकार, वक्ता तथा व्यापक राजनीतिक जानकारी रखने वाले राजनीतिक टीकाकार हैं। आपने कई एक समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं जैसे- जनसत्ता, साधना (साप्ताहिक) का संपादन किया है तथा राष्ट्रीय समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं जैसे – धर्मयुग, दैनिक जागरण, समय सहारा, रविवार, आर्गेनाइजर, पांचजन्य, जन्मभूमि, जनशक्ति आदि में एक स्तंभकार के रूप में अपना योगदान किया है। गुजरात तथा पूरे भारत में एक राजनीतिक विश्लेषक के रूप में आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा की जाती है। आपके भारतीय इतिहास तथा राजनीतिक सिद्धांतों के गहन अध्ययन ने आपको एक लब्धप्रतिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक और आलोचक के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

2. आपका जन्म 14 सितंबर, 1945 को गुजरात के सौराष्ट्र के मानवदर नाम के एक छोटे से कस्बे में हुआ था। आपने एम.ए. तथा एल.एल.बी. की उपाधियां प्राप्त कीं। आपने एस एन डी टी महिला कॉलेज, अहमदाबाद; जी एल एस गर्ल्स एवं सिटी आर्टस कॉलेज, गुजरात विश्वविद्यालय तथा सेन्ट जेवियर्स कॉलेज, अहमदाबाद में एक प्रोफेसर के रूप में अध्यापन का कार्य किया। आपने सौराष्ट्र विश्वविद्यालय; एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ोदरा स्थित अध्ययन मंडल के एक मानद सदस्य तथा पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा स्मारक समिति, गांधीनगर तथा स्वर्णिम गुजरात प्रदेश समिति, गांधीनगर के सदस्य के रूप में भी कार्य किया। आपने वर्ष 2009 से 2015 तक विश्व गुजराती समाज के महासचिव के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। आप गुजरात इतिहास अनुसंधान केन्द्र, गांधीनगर के अध्यक्ष भी हैं।

3. आप एक बहुसर्जक लेखक तथा स्तंभकार हैं, आपने विभिन्न समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में दो हजार से भी अधिक लेख लिखे हैं और प्रकाशित कराए हैं। आपने तथा आपकी पत्नी डॉ. श्रीमती आरती पांड्या ने पत्रकारिता, इतिहास, राजनीति विज्ञान, निबंध, जीवनियों तथा उपन्यासों पर 92 पुस्तकों का लेखन किया है। वर्ष 1976 में आपातकाल के दौरान अभिव्यक्ति की आजादी के दमन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने के लिए आपको जेल में डाल दिया गया था। आपको 'मीसा' के अंतर्गत एक वर्ष के लिए जेल में रखा गया। नागरिक अधिकारों को कुचलने तथा अभिव्यक्ति एवं प्रेस की आजादी पर अंकुश लगाने के खिलाफ विरोध के स्वरों को गुंजायमान करती आपकी पुस्तक 'मिसावासयम्' भारत में आपातकाल के दिनों का एक जीता-जागता अभिलेख है। आपातकाल के दिनों के दौरान आपकी पुस्तक 'हथेली नू आकाश' को गुजरात सरकार द्वारा एक इनाम के लिए पुरस्कृत किया गया था परंतु आपने इसे लेने से इंकार कर दिया था। आपातकाल पर लिखी गई आपकी कुछ कविताओं को जॉन ओलिवर पेरी द्वारा संपादित 'वॉयसेज ऑव एमरजेंसी' नामक संकलन में शामिल किया गया है।

4. आप एक स्वतंत्र विचारक हैं जो राजनीतिक घटनाओं की आलोचना ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में करते हैं। आपको कई एक गुजराती चैनलों के साथ-साथ राष्ट्रीय टेलीविजन के चैनलों पर समसामयिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं पर अपने विचार प्रकट करने के लिए एक पैनेलिस्ट के रूप में अक्सर आमंत्रित किया जाता है। आप एक छाप छोड़ने वाले वक्ता तथा पत्रकारिता एवं इतिहास के प्राध्यापक हैं। गुजराती भाषा में पत्रकारिता के सिद्धांत एवं इतिहास के प्रति किया गया आपका योगदान वास्तव में बहुत ही सराहनीय है। आप 2005 से गुजरात के स्थानीय इतिहास एवं ऐतिहासिक स्थानों पर आधारित 'मेगा इवेंट शो' के लेखन एवं प्रस्तुतिकरण के द्वारा वाइब्रेंट गुजरात समिट के प्रति योगदान कर रहे हैं।

5. आपको अनेक पुरस्कारों और इनामों से नवाज़ा गया है। आपकी पंद्रह पुस्तकों को गुजरात साहित्य परिषद एवं गुजराती साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत करके सम्मानित किया गया है। वर्ष 1991 में, इतिहास पर लेखन कार्य के लिए आपको नरमद साहित्य-सभा से नरमद चन्द्रक पुरस्कार से नवाज़ा गया। आपको अभिवादन ट्रस्ट, मुंबई; गुजरात पत्रकार संघ तथा एन.सी.जी.ओ. (इंग्लैंड) द्वारा सम्मानित किया गया है। आपकी पुस्तक 'मिसावासयम्' के लिए आपको काका कालेलकर पुरस्कार प्रदान किया गया है। पत्रकारिता, इतिहास, राजनीतिक-विश्लेषण, साहित्य एवं जीवनी लेखन के प्रति आपका योगदान वास्तव में असाधारण है।